उपसंहार

हिन्दी साहित्य में परिवेश और परिस्थितियों के अनुसार अनेक परिवर्तन होते आए हैं। यह परिवर्तित होती प्रवृति हिन्दी साहित्य में अगल-अलग कालखंडों को जन्म देती है। जिससे साहित्य में अलग-अलग विशेषताएं लक्षित की गईं। इन परिवर्तित होती प्रवृतियों से कभी साहित्य का कथ्य बदलता है तो कभी शिल्प। कभी उसका भाव बदलता है तो कभी उसका रूप। कभी उसकी भाषायी संरचना में परिवर्तन हुआ है तो कभी उसकी शैली में। हिन्दी साहित्य इन विविध व परिवर्तित होती प्रवृतियों के बीच राजाओं के राजदरबार, संतों की कुटियों और रीतिकालीन शृंगारिकता से होते हुए आधुनिक काल में हिन्दी कविता राष्ट्रीयता के साथ जुड़ती है क्योंकि तब तक राजाओं व सामंतों के साम्राज्य लगभग खत्म हो चुके थे या जो थे भी वे ब्रिटिश हुकूमत के अधीन थे। जिससे मुक्ति सब चाहते थे। और यही मुक्ति की भावना राष्ट्रीयता को प्रबल बनाती चली जाती है। हिन्दी साहित्य में जिसका प्रवर्तन भारतेन्दु युग में होता है। किन्तु भारतेन्दु युग में राष्ट्रीय चेतना हमें दोहरे रूप में दिखाई पड़ती है। एक तो राष्ट्र भक्ति के रूप में दूसरी राजभक्ति के रूप में। राष्ट्रीय काव्य धारा हिन्दी साहित्य की एक प्रमुख काव्य धारा है। पर हिन्दी साहित्य में सच्चे राष्ट्र भाव की जागृति द्विवेदी युग में होती है।

जहां राजभक्ति का प्रभाव खत्म होता है और राष्ट्रीयता का आवेग प्रबल होता है जिसमें मैथिलीशरण गुप्त जैसे राष्ट्रकवि होते हैं तो 'भारत-भारती' जैसे महान ग्रंथ का निर्माण भी होता है जो साहित्य में राष्ट्रीयता के स्वर को और अधिक तेज करती है और इसकी परंपरा मजबूत होती चली जाती है जो आगे चलकर स्वतंत्र रूप से राष्ट्रीय काव्य धारा के रूप में साहित्य में परिणत होती है। यह राष्ट्रीय काव्यधारा छायावाद की ही एक उप-काव्य धारा के रूप में दिखाई पड़ती है। इस राष्ट्रीय काव्यधारा में प्रमुख कवियों के रूप में माखनलाल चतुर्वेदी, रामधारी सिंह दिनकर, बालकृष्ण शर्मा नवीन, सुभद्रा कुमारी चौहान, सियारामशरण गुप्त और सोहनलाल द्विवेदी इत्यादि हुए। राष्ट्रीय काव्यधारा के कवियों ने राष्ट्रीय भावना को सबसे ऊपर करके काव्य सृजन किया। राष्ट्रीय काव्यधारा हिन्दी साहित्य का एक प्रतापी काव्यान्दोलन है। जिसमें राष्ट्रीयता की भावना अपने उत्कर्ष पर है। जिसमें माखनलाल चतुर्वेदी की ललकार है तो दिनकर की घोर गर्जना।

प्रस्तुत शोध प्रबंध में माखनलाल चतुर्वेदी तथा दिनकर की राष्ट्रीय कविता का भाषागत अध्ययन किया गया है। भाषा के सामान्यतः दो भेद किए जाते हैं- मौखिक भाषा तथा लिखित भाषा। लिखित भाषा के अंतर्गत भी भाषा के दो भेद किए जाते हैं- काव्यभाषा एवं गद्य की भाषा। काव्यभाषा वह भाषा है जो काव्य तत्त्वों से बंधी होती है। भाषा तत्त्वों

के आधार पर माखनलाल चतुर्वेदी एवं रामधारी सिंह दिनकर की राष्ट्रीय कविताओं का अध्ययन करते हुए उनके व्यक्तितत्व के साथ उनके भाषायी संबंध को भी प्रस्तुत किया गया है।

प्रस्तुत शोध प्रबंध के प्रथम अध्याय में राष्ट्र, राष्ट्रीयता की उत्पत्ति-विकास व उसके पोषक तत्त्वों पर विचार विश्लेषण करते हुए काव्यभाषा के स्वरूप व उसके उपादानों का विस्तृत अध्ययन किया गया है। विभिन्न कालखंडों में राष्ट्र का स्वरूप क्या रहा, और वर्तमान में राष्ट्र को किस रूप में वर्णित किया जाता है, इस पर विद्वानों के विचार क्या है, इत्यादि का विश्लेषण करते हुए, राष्ट्रीयता की भावना क्या है? यह किस रूप में पनपी इस पर विस्तृत चर्चा की गई है। साथ ही राष्ट्र व राष्ट्रीयता के पोषक तत्वों का वर्णन है और काव्यभाषा का स्वरूप एवं उसके उपादान के अंतर्गत काव्य क्या है? एवं काव्य का स्वरूप क्या है?, को बताते हुए भाषा क्या है? एवं काव्यभाषा के भेद, काव्यभाषा के तत्त्व इत्यादि के स्वरूप एवं उसके तत्त्वों को समझते हुए काव्यहेतु, काव्य प्रयोजन ,काव्य लक्षण, काव्यगुण, काव्यदोष, रस, छंद, अलंकार, शब्दशक्ति तथा राष्ट्रीय काव्य की भाषा इत्यादि का अध्ययन किया है।

द्वितीय अध्याय में माखनलाल चतुर्वेदी एवं दिनकर जी के काव्य में युगीन परिस्थितियाँ एवं दोनों कवियों के काव्य में उद्घाटित राष्ट्रीय स्वर का अध्ययन किया गया है। प्रामाणिक व यथार्थ लेखन वही माना

जाता है जो अपने समय, अपने युग बोध से आप्लावित हो। जिसमें उसके समय की आवाजों की गूँज हो। माखनलाल चतुर्वेदी व दिनकर जी के काव्य में न केवल युगीन परिस्थियाँ आती हैं बल्कि इनकी आवाज अपने समय की सबसे प्रतापी व तेज़ आवाज़ है। जिसमें इनकी राष्ट्रीय कविताओं का स्वर शिखर पर है। इनकी राष्ट्रीय कविताएं न केवल कविताएं हैं बल्कि वे देश को परतंत्रता की बेड़ियों से मुक्ति के संधान की कविताएं हैं। इनकी राष्ट्रीय कविताएं लोगों को आह्वान करती हुई कविताएं हैं । अपने लोगों से अपील करती हुई इनकी कविताएं हैं तो दुश्मनों के लिए इनकी कविताएं एक चुनौती है। इनकी राष्ट्रीय कविताएं किसी ज्वाला से कम नहीं हैं। इनकी कविताएं आशा उत्साह व ओज का संचार करती कविताएं हैं। माखनलाल चतुर्वेदी व दिनकर अपने युगीन परिस्थितियों से वैसे ही जुड़े हुए हैं जैसे इनके पूर्वज साहित्यकार बाबू भारतेन्दु हरिश्चंद्र, पंडित प्रताप नारायण मिश्र, मुंशी प्रेमचंद्र आदि अपने युगीन परिस्थितियों से जुड़े हुए थे। इनकी राष्ट्रीय कविताएं एक सजग प्रहरी की भाँति हैं, जैसे एक सजग प्रहरी अपने राष्ट्र की सुरक्षा के लिए तन्मय होकर खड़ा रहता है वैसे ही इनकी कविताएं राष्ट्र हित में एक सजग प्रहरी की भाँति तनकर खड़ी हुई कविताएं है।

तृतीय अध्याय में माखनलाल चतुर्वेदी के व्यक्तित्व व कृतित्व को प्रस्तुत किया गया है। माखनलाल चतुर्वेदी का व्यक्तित्त्व एक बहुआयामी

प्रतिभा संपन्न व्यक्तितत्व है। जिसमें वे कभी साहित्यकार की भूमिका में दिखते हैं तो कभी कर्तव्यनिष्ठ पत्रकार, कभी प्राध्यापक तो कभी सक्रिय स्वतंत्रता संग्राम सेनानी की तरह दिखाई पड़ते हैं। राष्ट्रभक्ति व राष्ट्रीयता उनके व्यक्तितत्व में धमनियों में रक्त की तरह प्रवाहित है। माखनलाल चतुर्वेदी जी के व्यक्तितत्व की विराटता व उनकी राष्ट्रीय चेतना से प्रभावित होकर उन्हें 'एक भारतीय आत्मा' के रूप में याद किया जाता है। माखनलाल चतुर्वेदी जितने बड़े कवि हैं उतने ही बड़े वे स्वतंत्रता संग्राम सेनानी भी हैं। यानि उनके एक हाथ में कलम है तो दूसरे हाथ में तलवार। वे अपने आपको सम्पूर्ण रूप से राष्ट्र के लिए समर्पित कर देते हैं और 'पुष्प की अभिलाषा' कविता में जो पुष्प की अभिलाषा है, वह स्वयं कवि की अभिलाषा है कि वह राष्ट्र हित राष्ट्र सेवा में अपने आप को समर्पित कर दें। इस तरह से माखनलाल चतुर्वेदी जी के व्यक्तितत्व के विविध रूपों से परिचित होते हुए उनके कृतित्व का अध्ययन किया है। कृतित्व में चतुर्वेदी जी हिमकिरीटिनी, हिमतरंगिनी, (जिसे प्रथम साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया है) माता, युगचरण, समर्पण, वेणु लो गूँजे धरा, आज के लोक प्रिय हिन्दी कवि, मरण- ज्वार, बीजुरी काजल आँज रही इत्यादि इनकी काव्य रचनाएं रही हैं। गद्य रचनाओं में साहित्य देवता, अमीर इरादे-गरीब इरादे, रंगों की बोली, इनके निबंध हैं। वनवासी, कला का अनुवाद कहानी है। चिंतक की लाचारी भाषण संग्रह है, विदया विलासी बालक, कृष्णार्जुन युद्ध इनके

नाटक हैं। शिशुपाल वध इनके द्वारा किया गया अनुवाद है। तथा संपादक के रूप में इन्होंने प्रभा, प्रताप, कर्मवीर का संपादन किया।

प्रस्तुत शोध प्रबंध के चतुर्थ अध्याय के अंतर्गत रामधारी सिंह दिनकर के व्यक्तितत्व व कृतित्व को प्रस्तुत किया गया है। रामधारी सिंह दिनकर का व्यक्तितत्व एक दिव्य व्यक्तितत्व है जिसमें भारत की दिव्य ज्योति अखंड रूप से जलती है। उनका व्यक्तितत्व बहुआयामी व्यक्तितत्तव है। जिसमें सबसे उज्ज्वल रूप उनकी राष्ट्रीयता का है। राष्ट्रीयता उनका पौरुष है। ओज उनका तेज है। दिनकर जी के व्यक्तितत्व में एक तरफ आग है, तो दूसरी तरफ राग है। एक तरफ उनमें भारत के अतीत की गौरव गाथा है, तो दूसरी तरफ उसके उज्ज्वल भविष्य निर्माण के सपने। दिनकर सच्चे अर्थों में राष्ट्र के अमर गायक हैं। उनके अंदर के राष्ट्र पुरुष को देखकर ही उन्हें डिप्टी राष्ट्रकवि की उपाधि दी गई है। दिनकर जी के व्यक्तितत्व में उनका सामाजिक चिंतक का रूप भी दिखाई पड़ता है। जहाँ वे समाज व मनुष्य की समस्याओं को लेकर चिंतित होते हैं। वहीं विसंगतियों के प्रतिरोध में दिनकर जी की आवाज एक चुनौती पूर्ण आवाज है। जो शासन सत्ता से लेकर बड़े-बड़े पूंजीपतियों तक के कान खड़े कर देती है। इनके साथ ही दिनकर जी के व्यक्तितत्व में एक कुशल राजनेता और शैक्षिक प्रशासनिक का भी व्यक्तितत्व है। इनके व्यक्तितत्व और उनके साहित्य की विराटता के

फलस्वरूप ही इन्हें साहित्य के सर्वोच्च सम्मान ज्ञानपीठ से सम्मानित किया गया है। साथ ही नागरिक सम्मान पद्म भूषण से सम्मानित किया गया है। इस तरह से कहा जा सकता है कि दिनकर जी का व्यक्तितत्व कई आयामों से परिपूर्ण एक सम्पूर्ण व्यक्तितत्व है। साहित्यिक रूप से भी दिनकर अत्यंत समृद्ध हैं। वे एक तरफ राष्ट्रीय कविताएं लिखते हैं, तो दूसरी तरफ मिथकों का प्रयोग कर खंडकाव्य व महाकाव्य भी लिखते हैं और चिंतन प्रधान निबंध लिखते हैं। दिनकर जी की काव्य कृतियों को यदि हम देखें तो उनमें- बरदोली विजय, प्रणभंग (खंडकाव्य), रेणुका, हुंकार, रसवंती, द्वन्द्वगीत, कुरूक्षेत्र (महाकाव्य), धूपछाँह (बाल साहित्य), सामधेनी, बापू, इतिहास के आँसू, मिर्च का मजा (बाल साहित्य), धूप और धुआँ, रश्मिरथी (खंडकाव्य), दिल्ली, नीम के पत्ते, नील कुसुम, सूरज का व्याह (बाल साहित्य), चक्रवाल, कवि-श्री, सीपी और शंख (अनुदित काव्य), नए सुभाषित, लोकप्रिय कवि दिनकर, उर्वशी (गीति नाट्य महाकाव्य,ज्ञानपीठ पुरस्कार से पुरस्कृत), परशुराम की प्रतीक्षा, आत्मा की आँखें (अनुदित काव्य संग्रह), कोयला और कवित्त्व, हारे को हरिनाम, दिनकर के गीत, रश्मिलोक इत्यादि दिनकर की काव्य रचनाएं हैं। तथा इनकी गद्य रचनाओं में मिट्टी की ओर, चित्तौड़ का साका, अर्धनारीश्वर, रेती के फूल, राष्ट्रभाषा और राष्ट्रीय एकता, हमारी सांस्कृतिक एकता, भारत की सांस्कृतिक कहानी, संस्कृति के चार अध्याय, उजली आग, देश विदेश, काव्य की भूमि , वेणुवन, वट पीपल,

लोकदेव नेहरू, शुद्ध कविता की खोज, राष्ट्रभाषा आंदोलन और गांधीजी, धर्म, नैतिकता और विज्ञान, भारतीय एकता, मेरी यात्राएं, दिनकर की डायरी इत्यादि इनका गद्य साहित्य है। यह दिनकर जी का विराट रचना संसार है जिसमें उनका जीवन और उनका राष्ट्रीय, सांस्कृतिक, साहित्यिक, सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक चिंतंन के संपूर्णता दिखाई पड़ती है।

अंतिम और पंचम अध्याय में माखनलाल चतुर्वेदी तथा रामधारी सिंह दिनकर जी की राष्ट्रीय कविताओं की भाषा का अध्ययन किया गया है। भाषा अभिव्यक्ति का माध्यम होती है। भाषा व साहित्य का संबंध अन्योन्याश्रित संबंध होता है। भाषा के सामान्यतः दो भेद किए जाते हैं। मौखिक भाषा व लिखित भाषा। लिखित भाषा ही सामान्यतः साहित्य की भाषा होती है। साहित्यिक भाषा के भी दो भेद किए गए हैं। काव्य की भाषा व गद्य की भाषा। काव्यभाषा यदि छंद, लय व ताल से युक्त होती है तो गद्य की भाषा छंद, लय व ताल से मुक्त। माखनलाल चतुर्वेदी जी व रामधारी सिंह दिनकर जी की राष्ट्रीय कविताओं की भाषा परिमार्जित, परिष्कृत खड़ी बोली हिन्दी है। जो रस, छंद और अलंकार से सिक्त है। ओज, प्रसाद व माधुर्य काव्य गुणों से युक्त है। अभिधा, लक्षणा व व्यंजना से परिपूर्ण है। तत्सम, तद्भव, देशज व विदेशी शब्दों के योग से निर्मित है। प्रतीकों व बिंबों से सजी हुई है। लोकोक्ति व मुहावरों से सशक्त बनी हुई है। चित्रात्मकता इनकी भाषा को सजीवता से भर रही है